गुरु हरदेव की शिक्षा को दुनिया भर में फैलाये हम।
उनके वचनों पर संतो आओ फूल चढ़ाये हम।

रोते हुए को हँसाया था, गिरते हुए को उठाया था।
निर्धन हो चाहे धनवान हो, सबको ही गले लगाया था।
उनके इन कर्मो को संतो सदा सदा अपनाये हम..

प्यार ही पूजा थी उनका प्यार का ही संसार था।
प्यार से मिलते सबसे वो प्यार ही उनका व्यापार था।
उनके इस प्यार को मिल जुलकर दुनिया भर में फैलाये हम...

दीवार रहित संसार प्यारा नक्शा था सत्गुरु हरदेव का।
बन जये पूल अब प्यार का कोई काम नही दीवार का।
हाथ से हाथ मिलाए सब दिल को दिल से मिलाये हम....

मांगे आओ सतगुरु माता से हम एक बने और नेक बने।
बाबा अवतार गुरबचन का हरदेव का प्यारा मिशन बने।
अब सतगुरु माता जी के 'रंग' उपदेश पे चल पाये हम...

तर्ज : सतगुरु तो कायम दायम है..